❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 45, अंक 44 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 29 अगस्त, 2022 से रविवार 4 सितम्बर, 2022
विक्रमी सम्वत् 2079 सृष्टि सम्वत् 1960853123
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

राष्ट्रीय शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) पर विशेष

गुरु-शिष्य की आदर्श परम्परा के संवाहक
महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं गुरु विरजानन्द जी महाराज

भारत गुरु ज्ञानियों का देश है। यहां समय समय पर हमारे महापुरुषों ने अपने गुरुजनो के चरणों में बैठकर तप, त्याग और समर्पण से शिक्षा प्राप्त करके अपने निजी जीवन, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व धरा को गरिमा प्रदान की है। योग दर्शन में ईश्वर को गुरुओं का भी गुरु बताया है। माता पिता और आचार्य को भी गुरु माना गया है। वस्तुत: गुरु शब्द का अर्थ है अंधेरे से प्रकाश की और अग्रसर करने वाला। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम और उनके भाइयों ने महर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र जी से वेदादि शास्त्रों की शिक्षा प्राप्त कर अधर्म, अन्याय, अनीति, अत्याचार को समाप्त किया, योगीराज श्रीकृष्ण ने महर्षि संदीपनी के चरणों में बैठकर विद्या अर्जन कर समाज को धर्म की राह पर चलना सिखाया, गुरु शिष्य परंपरा की यह श्रृंखला बहुत विस्तृत है, इस क्रम में महर्षि दयानंद सरस्वती ने प्रज्ञा चक्षु गुरु विरजानंद के सान्निध्य में शिक्षा प्राप्त कर भारत में छाए हुए अज्ञान अविद्या के अंधेरे को तिरोहित किया और दोनों आदर्श गुरु शिष्यों के सम्मिलन से आर्य समाज जैसी महान संस्था का उदय हुआ, जिसने लगभग 150वर्षों के इतिहास में भारत देश की आजादी से लेकर, जात पात, ऊंच नीच के भेदभाव से भारत को मुक्ति दिलाने का ऐतिहासिक कार्य किया, नारी शिक्षा का प्रारंभ, बालविवाह पर प्रतिबंध और विधवाओं को विवाह करने अधिकार दिलाया, समाज में फैले ढोंग पाखंड, अंधविश्वास को दूर हटाकर वैदिक मार्ग पर चलने की प्रेरणा भी आर्य समाज की ही देन है। यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सेवा, सत्संग, साधना की आदर्श परंपरा को पुन: स्थापित करने वाले आर्य समाज की इन समस्त उपलब्धियों का श्रेय जहां इसके संस्थापक महर्षि दयानंद सरस्वती जी को समर्पित है, वहीं उनके गुरु प्रज्ञा चक्षु स्वामी विरजानन्द जी का तपोबल भी स्तुत्य है। शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज ने गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान और अनेक अन्य शिक्षण केंद्र स्थापित कर नए आदर्श मानक सिद्ध किए हैं।

भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद् सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी के जन्मदिन 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर आर्य संदेश के इस अंक में गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श महर्षि दयानंद सरस्वती एवं उनके महान गुरु स्वामी विरजानंद जी से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग प्रस्तुत करते हैं। – सम्पादक

सन् 1860 ईस्वी में 35 वर्ष की अवस्था में महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वामी विरजानन्द जी की तपस्थली मथुरा पहुंचे। वहां उन्होंने स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रार्थना की। स्वामी विरजानंद जी ने महर्षि दयानंद से संग्रहीत सारी पुस्तकों को यमुना में फेंकने का आदेश दिया, महर्षि ने गुरु की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए अपनी समस्त पुस्तकों को बिना विचारे यमुना में प्रवाहित कर दिया। अगर इस विषय में विचार किया जाए तो किसी व्यक्ति को 35 वर्ष की अवस्था में गुरु के चरणों में बैठकर पढ़ने के लिए किसी ने

आज्ञा नहीं दी थी, उनके भीतर प्रबल जिज्ञासा थी, संकल्प था और तीव्र प्यास थी। नहीं तो इस उम्र में किसी को गुरु चरणों में बैठकर शिक्षा प्राप्ति के लिए कहा जाए तो वह यही कहेगा कि क्या इस आयु में भी पढ़ा जा सकता है और उस पर भी सबसे पहला गुरु यही आदेश करें कि अब तक का समस्त पुस्तक संग्रह नदी में फेंक दो, तो क्या शिष्य अपने गुरु की आज्ञा का पालन करेगा? आधुनिक परिवेश में तो 35 वर्ष की आयु वाला शिष्य गुरु की शरण में जाने वाला ही नहीं और चला भी गया तो अपनी संचित पुस्तकों को फेंकता भी नहीं। – शेष पृष्ठ 4 पर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में संचालित
आर्य प्रतिभा विकास केंद्र के विद्यार्थियों को महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद ने दिया आशीर्वाद

प्रत्येक विद्यार्थी के भीतर कोई न कोई प्रतिभा तो अवश्य होती है। किन्तु प्रतिभा को विकसित करने के लिए उचित साधन, सुविधाओं के साथ अनुकूल वातावरण भी बहुत महत्वपूर्ण होता है। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में भारत देश के उन प्रतिभावान विद्यार्थियों का एक विशेष प्रक्रिया के माध्यम से चयन करके निर्माण किया जा रहा है जो कि विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों में जहां अच्छी कोचिंग की व्यवस्था नहीं है अथवा प्रतिभावान होने पर भी विद्यार्थियों के सामने साधन सुविधाओं की समस्याएं हैं, आर्थिक चुनौतियां हैं या गहन अध्ययन करने का समुचित वातावरण नहीं है। इन सारी बाधाओं को दूर करते हुए अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा भारत की राजधानी दिल्ली में आर्य समाज डी ब्लाक विकास पुरी, आर्य समाज हरि नगर, एल ब्लाक और एस एम आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग में देश के होनहार विद्यार्थी यूपीएससी की परीक्षाओं की विधिवत तैयारियों में जुटे हैं। इस क्रम में एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में सिक्किम राज्य के सुयोग्य विद्यार्थियों का बैच अध्ययनरत है। आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के इन सभी केंद्रों में समय-समय पर आर्य समाज के अधिकारी, आर्य नेता और अनुभवी कुशल प्रशिक्षक विद्यार्थियों के बीच जाते हैं और उनका उत्साह बढ़ाते हैं। परिणाम स्वरूप सभी विद्यार्थियों पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। – शेष पृष्ठ 8 पर

आर्य प्रतिभा विकास संस्थान के पंजाबी बाग स्थित केन्द्र पहुंचने पर महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी का स्वागत करते श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, मनीष भाटिया जी एवं श्री अजय कालरा जी। इस अवसर पर संस्थान के छात्रों के साथ बैठक करते एवं छात्रों को अपना आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं देते महामहिम राज्यपाल जी। साथ में हैं श्री सत्यानन्द आर्य जी, श्री जोगेन्द्र खट्टर जी, श्री मनीष भाटिया जी एवं अन्य महानुभाव।

देववाणी-संस्कृत

अमृत-आत्मज्ञान

वेद-स्वाध्याय

यत्रा सुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः स मा धीरः पाकमत्रा विवेश।। - ऋ. 1/164/21
ऋषिः दीर्घतमाः।। **देवता** - विश्वेदेवाः।। **छन्दः त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **यत्र** = जहां, इस शरीर में **सुपर्णाः** = सुपतनशील इन्द्रियां **अनिमेषम्** = निरन्तर **अमृतस्य** = अमृतज्ञान के **भागम्** = अपने भाग का लाकर **विदथा** = वेदन के साथ **अभिस्वरन्ति** = चल रही हैं, मानो बोल रही हैं **अत्र** = उस, इस मेरे शरीर में **विश्वस्य भुवनस्य** = सब ब्रह्माण्ड का **इनः** = ईश्वर **गोपाः** = और सब भुवन का रक्षक **सः धीरः** = वह धीमान् ज्ञानमय **पाकं मा** = मुझ पक्तव्य में (अपरिपक्व में) **आविवेश** = प्रविष्ट होवे।

विनय- मनुष्य एक कच्चे घड़े के समान है, जब तक कि यह आत्मज्ञान की अग्नि में पक नहीं जाता। मैं कच्चा घड़ा इस संसार-सागर में पड़ा हुआ घुल रहा हूं, नष्ट होता जा रहा हूं। हे जगदीश्वर! यदि तुम्हारे ज्ञान की अग्नि की आंच मुझे शीघ्र पका न देगी तो मैं जल्दी ही समाप्त हो जाऊंगा। मैं अभी तक 'पाक हूं'-पक्तव्य हूं, कच्चा हूं। तुम पक्व हो, विपक्वप्रज्ञ हो। तुम शीघ्र मुझमें प्रवेश करो। तुम अमृत हो, मैं अभी तक मर्त्य हूं। तुम इस भुवन के ईश्वर हो, मैं अनीश हूं। जिस दिन मुझे आत्मा का ज्ञान हो जाएगा, अपनी अमरता का भान हो जाएगा तो मैं पक जाऊंगा। आत्मज्ञानी, अमर, परिपक्व होकर मैं तो संसार में पड़ा हुआ भी गल नहीं सकूंगा। मुझमें प्रविष्ट होकर मुझे अमर कर दो, पका दो। इस कच्चे घड़े में (शरीर में) यद्यपि इन्द्रियां लगातार कुछ-न-कुछ ज्ञान लाती हुई चल रही हैं, परन्तु उनके लाये हुए ज्ञान में-जुगनू के-से तुच्छ प्रकाश में-वह अग्नि नहीं है जो मुझे पका सके। सच तो यह है कि वे इन्द्रियां जिस पूर्ण अमर ज्ञान के एक अंश को अपने वेदन में लाती हैं, उसी की अभिलाषा अब मुझे लग गई है। उन्हीं द्वारा पता लगा है कि कोई अमृत ज्ञान भी है जिसके द्वारा मैं पूरा पक सकता हूं। इन्द्रियों में जो वेदन है वह तुम्हारे ही अपार ज्ञान, अनन्त चैतन्य से आता है। यह समझ आ जाने पर आज ये इन्द्रियां मेरे लिए जो कुछ ज्ञान लाती हैं उसमें मुझे अमरता का ही सन्देश सुनाई देता है। ये जो भी कुछ वेदन करती हैं उसमें मुझे वे यही बोल रही हैं'-तू अमर बन, अमर बन! अपने को पका ले, पका ले!'' अतः हे सब ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! मुझे पक्का करने के लिए तुम मेरे इस शरीर के भी स्वामी हो जाओ। हे त्रिभुवन के रक्षक! इस शरीर की भी रक्षा करो। हे धीर! ज्ञानमय! तुम्हारे प्रविष्ट हुए बिना यह कच्चा घड़ा कब तक रक्षित रह सकता है।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

मुस्लिम मत में क्या सब समान हैं? या इसके फिरके-जातियां या कबीले कोई देखना ही नहीं चाहता?

आखिर समाज में जातिवाद देखने का चश्मा अलग-अलग क्यों है?

हिन्दुओं की जाति प्रथा की चर्चा तो होती है पर मुस्लिमो की जाति प्रथा की क्यों नहीं?

मेरठ के लक्खीपुरा पिछले सप्ताह यहाँ के एक गंदे नाले में बोरे में बंद लाश जैसी कोई राहगीरों को चीज दिखाई देती है। मामला पुलिस के पास और पहुंचा पुलिस की उपस्थिति में जब बोरा खोला गया तो एक लड़की की सिरकटी लाश थी। मामला संगीन था तो क्राइम ब्रांच की टीम को दे दिया गया। क्राइम ब्रांच की टीम ने बड़ी तेजी से काम किया और पता चल गया कि यह सिरकटी लाश लिसाड़ी गेट, शालीमार गार्डन (मेरठ) में रहने वाली शाइना उर्फ़ सानिया की है।

पुलिस घर पहुंची मामले की जाँच की और अंत में पुलिस ने सानिया की हत्या के आरोप में सानिया के पिता शाहिद उसकी मां शहनाज और भाई को हिरासत में ले लिया। आप सोचिये हत्या का क्या कारण हो सकता है? कारण सिर्फ ये था कि सानिया वसीम से प्यार करती थी और उसके साथ घर बसाना चाहती थी। अब इसमें आप सोच रहे होंगे कि अड़चन क्या थी! जब दोनों मुसलमान थे? दरअसल वसीम छोटी जाति का मुसलमान था और सानिया उससे कुछ ऊँची जाति की मुस्लिम थी। यानि सानिया कुरैशी थी यानि कसाई बिरादरी से और वसीम सैफी बिरादरी से। मुसलमानों के अन्दर का दिखाई ना देने वाला गहरा जातिवाद सानिया की मौत का कारण बना, जिससे उसका सर तन से जुदा किया गया। मां शहनाज को पहले से सब कुछ पता था हत्या के बाद शहनाज पति शाहिद के जुर्म को छुपाने के लिए खामोश रही।

सानिया की हत्या पर भले ही मीडिया खामोश हो। मुसलमानों के अन्दर के इस भयानक रूप ले चुके जातिवाद पर भले ही विमर्श ना करते हो, इसे दबाकर रखते हो। हिन्दुओं के जातिवाद को लेकर कितना भी शोर मचाया जाता हो लेकिन किसी गंदे नाले में तैरती सानिया की लाश अब इनकी पोल खोल रही है।

सिर्फ लाश ही नहीं अब्दुल बिस्मिल्लाह का लिखा कुठांव उपन्यास इस भारतीय मुस्लिम समाज के एक दिखने वाले ढांचे पर भयंकर प्रहार करता है। ये सच है कि भारत के करीब 20 करोड़ मुसलमानों में से ज्यादातर स्थानीय हैं। जिनका धर्मान्तरण किया गया है, कैसे किया वह सब जानते हैं। लेकिन अधिकांश मुस्लिम उलेमा मौलाना या इमाम अक्सर ये कहते दिख जाते कि हिन्दुओं में जातिवाद था इस कारण ये लोग मुसलमान बन गये। आगे कहते हैं कि इस्लाम बराबरी की बात करता है, मसावात की बात करता है। हालाँकि मौलानाओं का यह कथन, यह झूठ थोड़े समय पहले बखूबी पकड़ा गया था।

ये हकीकत है कि भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे मुल्कों में आमतौर पर सभी मुस्लिम हिन्दू से मुसलमान बने, लेकिन वे जिस जाति और वर्ग से आए, उन्हें मुस्लिम होने के बावजूद उसी जाति या वर्ग का आज भी समझा जाता रहा है। जब हद से ज्यादा अपमान किया जाने लगा तो 90 के दशक में बिहार से डॉ. एजाज़ अली के आल इंडिया बैकवर्ड मुस्लिम मोर्चा बनाया। इसके बाद अली अनवर के आल इंडिया पसमांदा मुस्लिम महाज़ और महाराष्ट्र से शब्बीर अंसारी के आल इंडिया मुस्लिम ओबीसी आर्गेनाईजेशन जैसे संगठनों ने मुसलमानों के भीतर जाति भेदभाव को लेकर आंदोलनों को नयी गति दी।

लेकिन असल सच तब सामने निकलकर आया जब चार शोधकर्ताओं जिनमें प्रशांत के त्रिवेदी, श्रीनिवास गोली, फ़ाहिमुद्दीन और सुरेंद्र कुमार ने अक्टूबर 2014 से

.....अधिकांश मुस्लिम उलेमा मौलाना या इमाम अक्सर यह कहते दिख जाते हैं कि हिन्दुओं में जातिवाद था इस कारण ये लोग मुसलमान बन गये। इस्लाम बराबरी की बात करता है, मसावात की बात करता है। किन्तु ये हकीकत है कि भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश जैसे मुल्कों में आमतौर पर सभी मुस्लिम हिन्दू से मुसलमान बने, लेकिन वे जिस जाति और वर्ग से आए, उन्हें मुस्लिम होने के बावजूद उसी जाति या वर्ग का आज भी समझा जाता रहा है। ....डॉ. आफ़ताब आलम कहते हैं मुसलमानों के लिए जाति और छुआ-छूत जीवन की एक सच्चाई है। तथा अध्ययनों से पता चलता है कि छुआछूत मुस्लिम समुदाय का सबसे ज्यादा छुपाया गया रहस्य है। साफ और गंदी जातियां मुसलमानों के बीच मौजूद हैं। लेकिन इस पर न कभी मीडिया बहस करता और न वह दलित डर या शर्म की वजह से बाहर आते हैं जो इसका शिकार होते हैं। आप भले ही उन्हें मुसलमान कहिये लेकिन वे लोग आज भी दलित हैं और भेदभाव का शिकार हैं। लेकिन शर्म की बात है मिडिया इन खबरों की कवरेज नहीं करता, न ही देवबंदी, बरेलवी, अहले हदीस या अहमदियों के मौलानाओं को बुलाकर डिबेट करता। ....

अप्रैल 2015 के बीच उत्तर प्रदेश के 14 जिलों के 7,000 से ज्यादा मुस्लिम घरों का सर्वेक्षण किया था। इस सर्वेक्षण में दलित मुसलमानों के एक बड़े हिस्से का कहना है कि उन्हें गैर-दलितों की ओर से शादियों की दावत में निमंत्रण नहीं मिलता। उन्हें बड़ी जाति के मुसलमानों से जाति सूचक शब्द सुनने को मिलते हैं और उनका अपमान किया जाता है।

दूसरा इस सर्वेक्षण में दलित मुसलमानों के एक समूह ने कहा था कि उन्हें गैर-दलितों की दावतों में अलग बैठाया जाता है। उच्च-जाति के लोगों के खा लेने के बाद ही उन्हें खाना दिया जाता है। बहुत से लोगों ने यह भी कहा था कि उन्हें अलग थाली में खाना दिया जाता है। जातिवाद का यह नंगा नाच भेदभाव सिर्फ शादी तक सीमित नहीं है बल्कि दलित मुसलमानों ने कहा कि मदरसों में उनके बच्चों को कक्षा में और खाने के दौरान अलग-अलग पंक्तियों में बैठाया जाता है।

साथ ही इस सर्वेक्षण में सामने आया कि बड़ी जाति के कब्रिस्तानों में उन्हें अपने मुर्दे नहीं दफ़नाने दिए जाते अगर दफना दिया जाये तो लाश को कब्रिस्तान से बाहर फेंक दिया जाता है। इसके अलावा मस्जिदों में इन भयानक भेदभाव की खबरें आप रोज पढ़ते हैं जिसमें अरब से लेकर एशिया तक शिया, सुन्नी, अहमदिया, बोहरा एवं हर एक जाति और फिरके की अलग-अलग मस्जिद हैं। भूल से कोई एक दूसरें की मस्जिद में चला भी जाये तो जलील करके निकाला जाता है। - ***शेष पृष्ठ 6 पर***

स्वास्थ्य सन्देश

शरीर के लिए आवश्यक पोषक तत्त्व

शरीर संचालन के लिए आहार प्रमुख आधार है। इसका आभाव होने पर शरीररूपी रथ गतिशील न होकर थम जाता है। चिकित्सा शास्त्री 'इट रिट' का कथन है-99 प्रतिशत रोग आहार की अनियमितता एवं असंयम के कारण उत्पन्न होते हैं। आहार सम्बन्धित नियम संतुलित पोषक तत्त्वों में समाए होते हैं। इसके लिए हमें यह ज्ञात अवश्य होना चाहिए कि किस पदार्थ से शरीर को कौन-सा पोषक तत्त्व प्राप्त होता है तथा किस विटमिन की शरीर को कब जरूरत होती है। आइए! जाने पोषक तत्त्वों का महत्त्व और उनके उपयोग का उचित तरीका.....

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है कि शरीर को सभी पोषक तत्वों की प्राप्ति होती रहे। पोषक तत्वों में विटामिन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और विटामिनों की कमी होने के कारण शरीर रोगों से संघर्ष नहीं कर पाता और अनेक रोगों से ग्रस्त हो जाता है। अत: विटामिनों से युक्त पदार्थों का उचित मात्रा में सेवन अति आवश्यक है।

विटामिन ए : स्वस्थ आंखों एवं स्वस्थ त्वचा दोनों के लिए इसकी आवश्यकता होती है। विटामिन ए इन्फेक्शन की स्थिति में भी शरीर को शक्ति प्रदान करता है। इसकी कमी से त्वचा रूखी और बेजान हो जाती है। विटामिन ए के अभाव होने से रतौंधी का रोग हो सकता है। विटामिन ए से सम्बन्धित फलों, सब्जियों का प्रयोग अवश्य करें। हरी सब्जियां जैसे पालक, पत्तागोभी, गाजर, टमाटर, सीताफल आदि का सेवन करें। संतरा, मौसमी, खरबूजा आदि फलों में विटामिन ए प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। दूध, दही, मक्खन आदि में भी विटामिन ए भरपूर मात्रा में होता है।

विटामिन बी : का अभाव भी अगर शरीर में हो जाए तो शरीर में त्वचा संबंधी रोग, 'बेरी-बेरी' एवं 'नरवस डिसआर्डर' हो जाते हैं। विटामिन बी काम्पलेक्स गेहूं, साबूत अनाज, दाल, हरी सब्जियों और खमीर आदि में पाया जाता है। विटामिन बी भूख को बढ़ाता है और मांसपेसियों के लिए हितकर है।

विटामिन सी : विटामिन सी की आवश्यकता हमारे शरीर को प्रतिदिन होती है। इसका मुख्य कारण है कि इस विटामिन को हमारा शरीर स्टोर नहीं करता। इस विटामिन की कमी से 'स्कर्वी' नामक रोग हो जाता है। विटामिन सी शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है।

कई शोधों से यह तथ्य सामने आया है कि विटामिन सी एवं ई हृदय रोगों की सम्भावनाओं को भी कम करता है। प्रतिदिन एक रसीले फल का अवश्य सेवन करें। संतरा, नींबू, मौसमी, टमाटर, आम, पपीता, स्ट्राबरी, अमरूद इसके अच्छे स्त्रोत हैं।

विटामिन डी : हड्डियों की निर्माण प्रक्रिया और स्वस्थ दांतों के लिए विटामिन डी अति आवश्यक है। इसकी कमी से हड्डियों की बीमारी 'रिकेट्स' हो जाती है। इसे पर्याप्त मात्रा में ग्रहण करना जरूरी है। सूर्य की उष्णता और दूध आदि इसके लिए उपयुक्त हैं।

विटामिन ई : शरीर की सेल प्रक्रिया को सुरक्षा प्रदान करता है ओर सेल्स को नष्ट होने से बचाता है। इस विटामिन को प्राप्त करने के लिए दूध और अनाज आदि का सेवन करें। प्रत्येक विटामिन हमारे शरीर में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अत: उपयुक्त मात्रा में प्रयोग करना बहुत जरूरी है।

स्वस्थ एवं चुस्त रहने के लिए हमें केवल विटामिन और मिनरल की ही जरूरत नहीं होती। अपितु वैज्ञानिकों ने और भी ऐसे हजारों तत्वों की खोज की है, जो स्वास्थ्य के लिए अनिवार्य तत्व हैं। और जो शाकाहार में ही पाये जाते हैं। इन्हीं सब तत्वों को एक शब्द में 'फायटोन्युट्रीएंट्स' कहते हैं। यह हमारे लिए एक ऐसा प्राकृतिक उपहार है, जो हमें कैंसर, दिल की बीमारी सहित अनगिनत गंभीर बीमारियों से बचाते हैं। आप इन तत्वों को भोजन के सिवाय कहीं और से नहीं पा सकते।

पौधों में 'फायटोन्युट्रीएंट्स' एक सुरक्षा कवच का काम करते हैं। ये हथियार-धारी सेना की तरह होते हैं, जो बीमारियों से लड़ने के लिए सदा मुस्तैद रहते हैं, इंसानों में ये स्वास्थ्य को लाभ पहुंचाने वाले अनगिनत काम करते हैं। देखा गया है कि दूसरी बीमारियों की अपेक्षा कैंसर और हृदय-रोगों के लिए फायटोन्युट्रीएंट्स ज्यादा फायदेमंद हैं।

यूं तो आधुनिक चिकित्सा जगत में इन बीमारियों के कारण कई बातों को बताया जाता है, पर उनमें गैर जरूरी अवशेष एक कॉमन तत्व हैं, जिन्हें फ्री-रैडिकल्स कहते हैं। फ्री-रैडिकल्स नाम का कचरा हमारी कोशिकाओं को हानि पहुंचाते हुए पूरे शरीर में घूमता रहता है। नतीजन रक्तवाहनियों में ब्लॉकेज या एथोरोस्कलेरोसिस, हृदय रोग, शूगर (डायबिटीज), आर्थराटिस, डिमेंशिया या याददाश्त में कमी जैसी बीमारियां जन्म लेती हैं। इन हानिकारक फ्री रैडिकल्स के कहर से हमें बचा सकते हैं एंटी ऑक्सीडेंट, जो फ्री-रैडिकल्स को नष्ट कर देते हैं और वनस्पतियों में पाए जाने वाले हजारों रोग-विरोधी तत्व यानी फायटोन्युट्रीएंट्स, शक्तिशाली एंटी ऑक्सीडेंट का काम करते हैं।

आर्यसमाज की सेवा योजना 'सहयोग' के बढ़ते कदम

विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी बहुत से लोग अपनी मूलभूत जरूरतों की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य जनों को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आई कि एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतारकर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धरण करना कम कर दिया था।

महर्षि दयानंद जी के अनन्य अनुयायी जेबीएम ग्रुप तथा नील पफाउंडेशन के सहयोग से गरीब निर्धन क्षेत्रों में जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए 'सहयोग' नामक योजना लंबे समय से चल रही है। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रही है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग योजना को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली-एन.सी.आर में संचालित किया जाता है। सहयोग सेवा की यह योजना अत्यंत जनकल्याणकारी सिद्ध हो रही है। सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरंपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों की झुग्गी-बस्तियों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा-सहायता का एक महान अभियान गतिशील है।

हमारी भावना और कामना

आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को 'सहयोग' जैसी सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़-चढ़कर ढोंग कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं, वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें।

कैसे बनें 'सहयोग' के सदस्य?

आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं । जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें। इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

प्रेरणा - आप भी अपने क्षेत्र, कालोनी, सोसायटी या ऑफिस कॉम्प्लेक्स में इस प्रकार के वस्त्र संग्रह कैम्प लगवा सकते है और 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान एकत्र कराकर दे सकते हैं। आप सोशल मीडिया या अन्य माध्यमों से अपने यहां इसकी सूचना दें और सहयोग टीम को 9540050322 पर सूचित करें। हमारी टीम आपके यहां आएगी, स्टाल लगाएगी और आपके यहां एकत्र हुए सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली- 110007

प्रथम पृष्ठ का शेष

गुरु-शिष्य की आदर्श परम्परा के संवाहक महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं गुरु विरजानन्द .....

लेकिन एक महान गुरु के महान शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती जी की निष्ठा, विश्वास और संकल्प शक्ति अद्भुत और अनुपम थी। महर्षि ने गुरु विरजानंद जी को सर्वोपरि माना है और संपूर्ण शिष्य समुदाय को यह प्रेरणा प्रदान की है कि गुरु को तो मानिए लेकिन गुरु की आज्ञा को सर्वोपरि मानिए, तभी शिष्य का जीवन सफल होता है।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने 3 वर्षों में गुरु विरजानंद जी से अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त आदि संपूर्ण व्याकरण की शिक्षा ग्रहण कर ली थी। स्वामी विरजानंद जी एक बार पढ़ाने के बाद पुनरावृत्ति नहीं करते थे, एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने गुरु विरजानंद

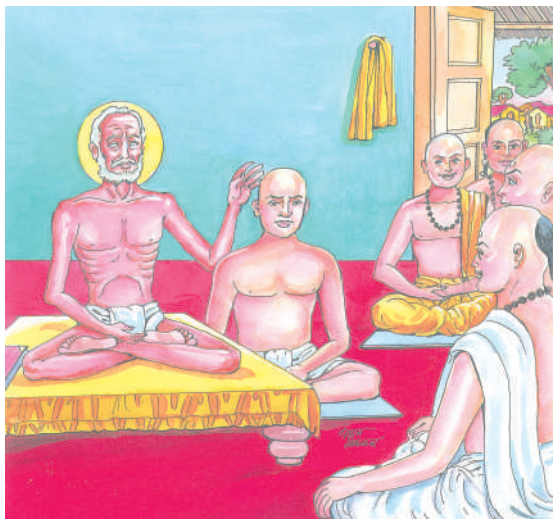

जी से पुनः पाठ पढ़ाने का अनुरोध किया तो स्वामी विरजानंद जी ने दयानंद जी को डांटते हुए कहा कि दुबारा पाठ नहीं पढ़ाऊंगा। स्वामी जी यमुना के किनारे ध्यान में बैठकर चिन्तन-मनन करने लगे और लंबे समय तक प्रयास करने पर उन्हें अपना पाठ स्मरण हो आया, महर्षि गुरु विरजानंद जी के पास आए और कहने लगे कि गुरुवर मुझे आपके द्वारा पढाया गया पाठ स्मरण हो गया है, तभी विरजानंद जी ने पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया। इससे ज्ञात होता है कि शिष्य को सावधान होकर पढ़ना चाहिए और गुरु को पूरा सम्मान देना चाहिए, तभी शिक्षा फलीभूत होती है। आधुनिक परिवेश में तो गुरु और शिष्य वीडियो बना बनाकर पढ़ते-पढ़ाते हैं, तब भी उनकी साधना सफल नहीं होती। क्योंकि सावधान होकर पढ़ने से सफलता मिलती है।

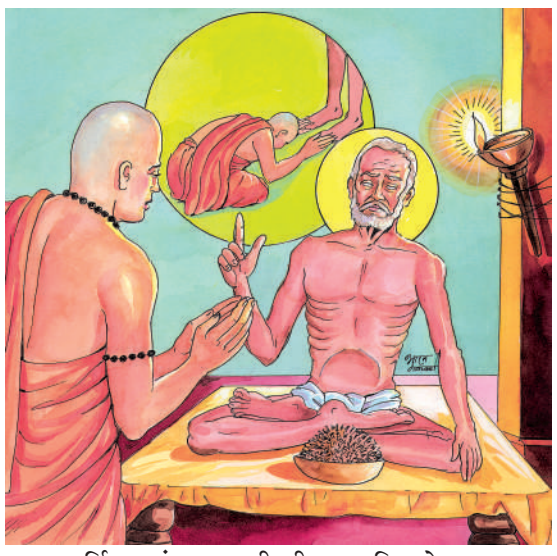

महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरुभक्ति, सेवा भावना अपने आपमें बड़ी महान थी। अपने गुरु के स्नान के लिए यमुना जल लेकर आना, उनकी कुटिया की साफ सफाई करना और उनके हर सेवा कार्य को पूरी निष्ठा के साथ करना यह उनका दैनिक कर्तव्य था। जिसे उन्होंने पूरी तन्मयता के साथ निभाया। एक बार महर्षि दयानंद सरस्वती जी गुरु कुटिया में झाड़ू लगा रहे थे कि

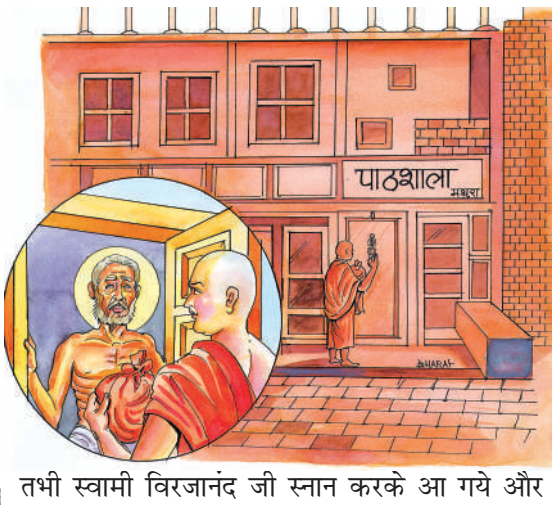

तभी स्वामी विरजानंद जी स्नान करके आ गये और उनका पैर कूड़े पर पड़ गया। स्वामी विरजानंद जी को महर्षि दयानंद जी पर इतना क्रोध आया कि उन्होंने महर्षि की डंडे से प्रताड़ना की। इस पर महर्षि दयानंद सरस्वती शांत सहज भाव से गुरु द्वारा दिए गए दंड को विनम्रता पूर्वक स्वीकार करते रहे और बाद में गुरु चरणों को पकड़ कर कहने लगे की हे गुरुवर, मेरा शरीर तो कठोर है लेकिन आपके हाथ तो कोमल हैं कहीं मुझे दंड देते हुए आपके हाथों में चोट तो नहीं लग गई। आधुनिक परिवेश में देखा जाए तो गुरु शिष्य को प्रताड़ित करने का अधिकारी नहीं है और अगर कोई कर भी देता है तो उसको उसका स्वयं दंड भुगतना पड़ता है। लेकिन महर्षि

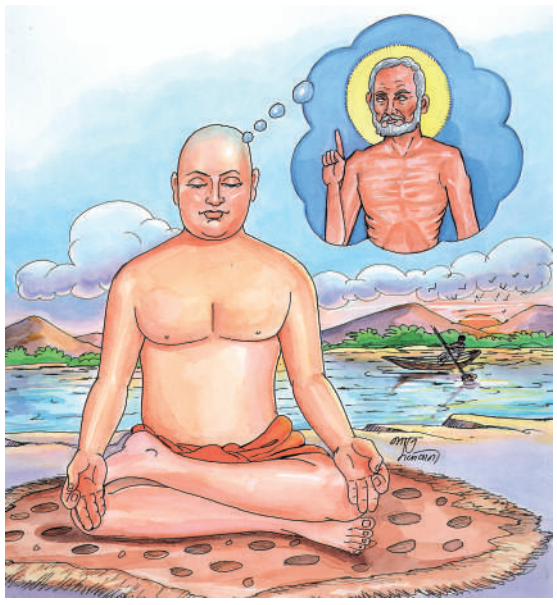

दयानंद की गुरु चरणों के प्रति श्रद्धा निष्ठा अद्भुत थी और उन्होंने मानव समाज को संदेश दिया कि अगर गुरु से शिक्षा प्राप्त करनी है तो विनम्र होना पड़ेगा, अपने भीतर पात्रता विकसित करनी होगी, तभी तुम सच्चे शिष्य बनकर कल्याण की राह पर आगे बढ़ सकते हो।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 5 सितंबर 2022 शिक्षक दिवस हमारे सामने है। आज के समय में स्कूल और कॉलेजों में जो गुरु और शिष्य के आदर्शों की गरिमा समाप्त होती जा रही है। गुरु के नाम पर अध्यापक

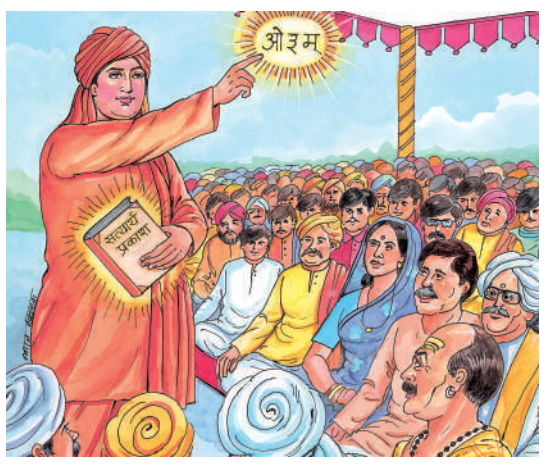

वर्ग ने शिक्षा का व्यापार शुरू कर दिया है और शिष्य समाज अपने हिसाब से केवल जीविका उपार्जन के लिए शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। शिक्षा का अर्थ केवल यही नहीं होता कि हम केवल अपने लिए और अपनों के लिए खाना-कमाना सीखें, शिक्षा तो व्यक्ति, परिवार, समाज, देश और दुनिया में आदर्श स्थापित करने की शक्ति होती है। राष्ट्र और मानव सेवा की भावनाओं का निर्माण ही शिक्षा का सच्चा अभिप्राय तथा अभिन्न अंग है। इन समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती और गुरु विरजानंद जी ने जो गुरु शिष्य परंपरा के आदर्श प्रस्तुत किए हैं वे युग युगांतरों तक मानव समाज

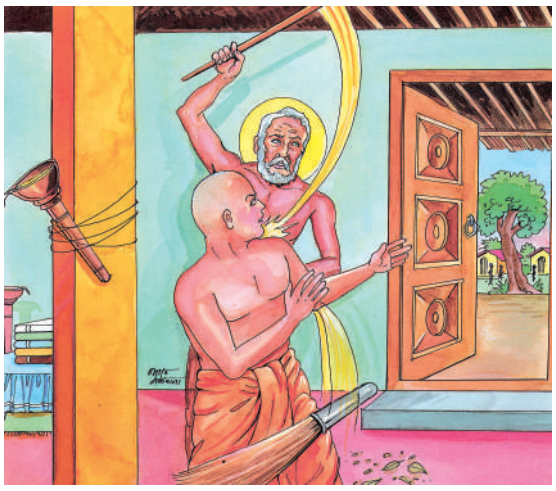

को सुदिशा प्रदान करते रहेंगे।

महर्षि दयानंद सरस्वती ने 3 वर्ष के अल्पकाल में अपने गुरु विरजानंद जी से शिक्षा प्राप्त कर गुरु दक्षिणा के रूप में जब गुरु दक्षिणा के रूप में गुरु को प्रिय भेंट लौंग समर्पित करने लगे तब गुरु विरजानंद ने अपने प्रिय शिष्य महर्षि दयानंद सरस्वती को कहा कि मुझे गुरु दक्षिणा देना ही चाहते हो तो जो आज भारत में अज्ञान अविद्या का अंधेरा छाया हुआ है, चारों तरफ ढोंग, पाखंड और अंधविश्वास का बसेरा है, वेदों के ज्ञान से नए सवेरे का उदय करो, समाज में जो भय, भ्रम व्याप्त है, पूरा मानव समाज दुःख पीड़ा से त्रस्त है, सबको जीने की राह दिखाओ। देश और धर्म के लिए अपना पूरा जीवन नौछावर कर दो, महर्षि दयानंद सरस्वती ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए अपना पूरा जीवन वैदिक, धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार प्रसार और विस्तार के

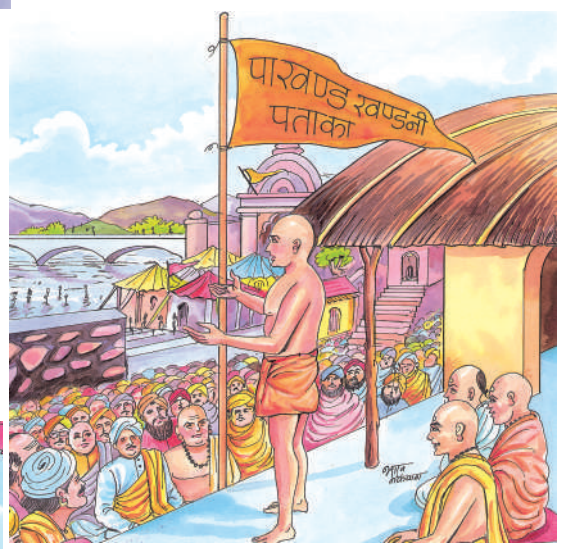

लिए समर्पित कर दिया। स्वयं ने जहर पीकर समाज को अमृत प्रदान किया। आर्य समाज की स्थापना करके नये गौरवशाली युग का आरंभ किया। ऐसे गुरु शिष्य की आदर्श परंपरा को शत-शत नमन करने का शुभ अवसर ही शिक्षा दिवस है, शिक्षा दिवस पर भारत के विद्यार्थियों को गुरु विरजानंद और महर्षि दयानंद सरस्वती जी आदर्श जीवन पढ़ने का संकल्प लेना चाहिए और अपने जीवन का सर्वांगीण विकास करना चाहिए।

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी से की आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल दिल्ली के अधिकारी ने भेंट

ग्रीष्म कालीन प्रशिक्षण शिविर की एलबम की भेंट : आगामी कार्यों एवं लक्ष्यों को लेकर की सार्थक चर्चा

आर्य वीर दल और वीरांगना दल आर्यसमाज के संगठन के आधार हैं, इन्हें मजबूत करना आवश्यक - सुरेन्द्र कुमार आर्य

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी के नेतृत्व में आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल का एक प्रतिनिधि मंडल ने जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं महर्षि दयानन्द जन्म द्विशताब्दी आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी उनके गुरुग्राम स्थित कार्यालय पहुंचकर भेंट की। महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने सभी अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं का परिचय कराया। इस अवसर पर आर्य वीरांगना दल एवं आर्य वीर दल के अधिकारियों ने इस वर्ष के ग्रीष्मकालीन शिविर की फोटो एलबम प्रदान की। श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य ने भी महानुभावों से आर्य वीर दल/वीरांगना दल के आगामी कार्यों और लक्ष्यों तथा महर्षि दयानन्द द्वि शताब्दी जन्मोत्सव की कार्य योजना में आर्यवीरों की भूमिका की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना दल आर्यसमाज के संगठन के आधार हैं। आर्यसमाज की प्रगति और उन्नति के लिए इन्हें मजबूत करना अत्यन्त आवश्यक है। प्रतिनिधि मंडल में आर्य वीरांगना दल की संचालिका श्रीमती शारदा आर्या, कोषाध्यक्षा श्रीमती अंजली आर्या, आर्य वीर दल दिल्ली के महामन्त्री श्री बृहस्पति आर्य, उपमन्त्री श्री पवन आर्य, प्रधान शिक्षक श्री धर्मवीर आर्य एवं अन्य महानुभाव सम्मिलित रहे।

जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं द्विशताब्दी महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव आयोजन समिति के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को फोटो एलबम भेंट करते हुए श्रीमती शारदा वर्मा, श्रीमती विजय रानी, श्रीमती आदर्श, श्रीमती अंजली आर्या, श्री बृहस्पति आर्य, श्री पवन आर्य एवं श्री धर्मवीर आर्य।

सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी को 50वें जन्म दिवस की शुभकामनाएं

भाई विनय आर्य जी को जन्मदिन की बहुत-बहुत बधाई! आप उत्साह व बुद्धिमत्ता से वैदिक धर्म के सेवाकार्यों को आगे बढ़ाते रहें - धर्मपाल आर्य, प्रधान, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ताओं ने 25 अगस्त 2022 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड के प्रांगण में श्री विनय आर्य जी के 50वें जन्मदिन पर विशेष यज्ञ, भजन और उपदेश का आयोजन किया। आर्य समाज 15 हनुमान रोड के धर्माचार्य डॉ. कर्णदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ किया गया। जिसमें यजमान के रूप में महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुषमा आर्या, सुपुत्री कु. वर्चसी आर्या, श्री विजेंद्र आर्य एवं श्रीमती मीनू सिंघल, श्री अरुण प्रकाश वर्मा एवं श्रीमती रश्मि वर्मा ने यज्ञाहुतियां प्रदान की।

यज्ञोपरांत श्री राजबीर शास्त्री ने यज्ञ प्रार्थना की और जन्मदिन पर विशेष भजन प्रस्तुत किया। श्री विकास आर्य, श्री सत्य प्रिय शास्त्री और श्री दिनेश आर्य ने भी भजन प्रस्तुत किए। सभा के समस्त प्रकल्पों - दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक प्रकाशन, प्रचारक प्रकल्प, मीडिया सैन्टर, सहयोग, मशाल के सभी कार्यकर्ताओं ने महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं परिवार पर पुष्प वर्षा कर आशीर्वाद दिया।

श्री विनय आर्य जी ने सबका धन्यवाद करते हुए कहा कि पूज्य माता पिता जी की प्रेरणा से बचपन से ही आर्य समाज से जुड़ गया था, महर्षि दयानन्द सरस्वती और सभी आर्य महापुरुषों के जीवन दर्शन पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, आर्य वीर दल के शिविरों में प्रशिक्षण प्राप्त किया, लगातार आर्य समाज के सेवा कार्यों के प्रति लगाव बढ़ता गया, आज आप सबका स्नेह और आशीर्वाद प्राप्त हो रहा है, मेरे जीवन का लक्ष्य और उद्देश्य आर्य समाज के सेवा कार्यों को आगे बढ़ाना है, आप सबका आशीर्वाद इसी तरह से मिलता रहे और आर्य समाज का प्रचार-प्रसार और विस्तार होता रहे, यही मेरी ईश्वर से प्रार्थना है।

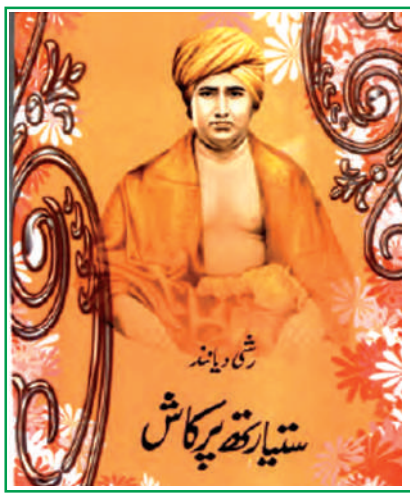

दिल्ली सभा द्वारा प्रकाशित

महर्षि दयानन्दकृत

सत्यार्थ प्रकाश

उर्दू भाषा में अनुवाद)

मूल्य मात्र 100/- रुपये

amazon

पर भी उपलब्ध

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.)

सम्पर्क : 011-23360150, 9540040339

पर्यावरण बचाने के लिए पोलीथीन नहीं कपड़े के थैले अपनाओ : ओम बिरला

आर्य समाज का 'कपड़े के थैले अपनाओ, पर्यावरण बचाओ' अभियान शुरू

आर्यसमाज का कपड़े के थैले वितरण का अभियान जन्माष्टमी के अवसर पर 19 अगस्त से शुरु हो गया। कोटा बूंदी के सांसद एवं लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने अभियान का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि हमें पर्यावरण बचाने के लिए प्लास्टिक पोलीथीन का उपयोग नहीं करना चाहिए। पर्यावरण संरक्षण हम सबका दायित्व है। उन्होंने आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के अभियान को सराहनीय बताते हुए कहा कि कपड़े के थैले अपनाओ और पर्यावरण बचाओ। आर्यसमाज कोटा संभाग के प्रधान अर्जुन देव चड्डा के साथ लालचन्द आर्य, राम नारायणण कुशवाह, कैलाश नामा, किशनलाल हरियाणा, क्षेत्रपाल आर्य, गुलाब चन्द आर्य ने लोकसभा अध्यक्ष से उनके कोटा कार्यालय में भेंट की। आर्य प्रतिनिधियों ने ओम बिरला को केसरिया साफा, मोतियों की माला, पीतवस्त्र पहनाकर मन्त्रोच्चार केसाथ अभिनन्दन किया और उनके सान्निध्य में कपड़े के थैले वितरित करने के अभियान का शुभारम्भ किया।

Chapter - 19-20 Part- 1

Arya Samaj and the Aryas

Srishti (Universe) and *Yuga* (duration of each srishti)

Our ancient scriptures refer to the duration of each srishti into four arab (1 arab = 100 crore) and 32 crore; this means 432 crore years. Once this period gets over, pralay (total destruction takes place. The duration of each pralay is equal to one srishti, that is, 432 crore years. The period during the srishti is called Brahma - din (God's day) and the period during a pralay is called Brahma - ratri (God's night).

Another unit of time, known as *chaturyugi* consists of 33 lakh and 20 thousand years. One Brahma - din accommodates 1,000 *chaturyugis*. One *chaturyugi* consists of four *yugas*, which are called *satayuga, dwaparyuga, tretayuga* and *kaliyuga*. *Kaliyuga* is nothing but a unit of time as a part of a yuga. Generally, people talk of *kaliyuga* as the worst time in one's life but that is not true ; it is just a unit of time.

Shuddhi - During the period when foreign invaders attacked India, there was a continuous downfall of the Hindus after the period of the Mahabharata war. The local people closed the doors of entry for all those who were not Hindus ; even for those who had converted to some other religion due to certain circumstances and wanted to return to the Hindu fold. Such people were ridiculed by the so - called staunch Hindu leaders who ridiculed them by saying that how could a donkey converted into a cow.

The effect of such fanaticism was that the exit door from Hinduism was kept open while the entry doors were permanently locked. As expected, Muslims and Christians made full use of this restriction by converting widows, orphans and the poverty - ridden Hindus to their religion.

To counter this confusing situation, the Arya Samajis took up the subject of shuddhi into its hand and under it, allowed the entry of those who wanted to adopt Arya Samaj. This proved to be an opportunity for converted Hindus to get reinstated into the Hindu society again. The Hindu society, though sceptical initially, has now recognised the importance of this ritual of shuddhikaran.

-: With thanks :-
"The Beliefs of Arya Samaj"
by Shri Mahendra Arya

पृष्ठ 3 का शेष

आखिर समाज में जातिवाद देखने का चश्मा अलग-अलग क्यों है?

सर्वेक्षण करने वाली जब यह टीम ऊँची जाति के मुसलमानों के घर गयी और उनसे पूछा कि जब कोई दलित मुसलमान उनके घर आता है तो क्या होता है। इस पर उन्होंने ने कहा कि कोई दलित मुसलमान उनके घर नहीं आ सकता और जिनके घर दलित मुसलमान आते भी हैं तो दलित मुसलमानों को उन बर्तनों में खाना नहीं दिया जाता जिन्हें वह आमतौर पर इस्तेमाल करते हैं।

इस विषय पर काम करने वाले राजनीति विज्ञानी डॉ. आफ़ताब आलम कहते हैं मुसलमानों के लिए जाति और छुआ-छूत जीवन की एक सच्चाई है। तथा अध्ययनों से पता चलता है कि छुआछूत मुस्लिम समुदाय का सबसे ज्यादा छुपाया गया रहस्य है। साफ और गंदी जातियां मुसलमानों के बीच मौजूद हैं। लेकिन इस पर न कभी मीडिया बहस करता और न वह दलित डर या शर्म की वजह से बाहर आते हैं जो इसका शिकार होते हैं। आप भले ही उन्हें मुसलमान कहिये लेकिन वे लोग आज भी दलित हैं और भेदभाव का शिकार हैं। लेकिन शर्म की बात है मिडिया इन खबरों की कवरेज नहीं करता, न ही देवबंदी, बरेलवी, अहले हदीस या अहमदियों के मौलानाओं को बुलाकर डिबेट करता।

हाँ, अगर यही सानिया किसी हिन्दू जाति से होती और वसीम किसी कथित पिछड़े वर्ग से तो न्यूज़ रूम के एंकर और मौलाना चार दिन इस पर लम्बी-लम्बी डिबेट करते और हिन्दू समाज को बदनाम करते। किसी न्यूयॉर्क टाइम्स या वाशिंगटन पोस्ट में किसी बरखा दत्त या राणा अयूब के लम्बे-लम्बे आर्टिकल छपते। किन्तु मामला मुसलमानों की अंदरूनी मसावात की जंग का है, बराबरी की लड़ाई का है तो सब मौन हैं। लेकिन अब फैसला दलित मुसलमानों को लेना होगा कि मजहब बदलने पर भी उनके साथ भेदभाव क्यों?

- सम्पादक

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

निन्दा-प्रार्थना-फल

२३-निन्दा

मिथ्या ज्ञान बखान में
जो आग्रह का रूप।
गुण तज, अवगुण रोपना
'निन्दा' अवनति कूप ।।30।।

२४-प्रार्थना

श्रेष्ठ कर्म की सिद्धि को
करे पूर्ण उद्योग।
यही 'प्रार्थना' ईश का
ले जन का सहयोग ।।31।।

२५-प्रार्थना का फल

आत्मा में हो आर्द्रता,
गुण-ग्रहण में यत्न।
अहं नष्ट हो 'प्रार्थना' का
पावे फल रत्न ।।32।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

आर्य सन्देश

क्या आपको डाक प्राप्त करने में कोई असुविधा हो रही है?

क्या आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त नहीं हो रहा?

क्या आप आर्य सन्देश साप्ताहिक को ऑनलाइन पढ़ना चाहते हैं?

क्या आप आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित करने में सहयोग करना चाहते हैं?

क्या आप देश-विदेश में रहने वाले अपने मित्रों-दोस्तों, रिश्तेदारों को भी आर्य सन्देश पढ़वाना चाहते हैं?

यदि हां! तो

आज ही अपने मोबाइल में टेलिग्राम एप्प डाउनलॉड करें और नीचे दिए लिंक पर क्लिक करके आर्य सन्देश ग्रुप जॉइन करें https://t.me/aryasandesh110001

- सम्पादक

प्रेरक प्रसंग

वे कितने महान थे!

महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज ने अपने जीवन के कुछ नियम बना रखे थे। उनमें से एक यह था कि अपने लिए कभी किसी से कुछ माँगना नहीं। इस नियम पर गृहस्थी नारायणप्रसाद (महात्मा जी का पूर्वनाम) ने कठोरता से आचरण किया। अब उनका ऐसा स्वभाव बन चुका था कि वे किसी अज्ञात व्यक्ति से तुच्छ-से-तुच्छ वस्तु भी लेने से संकोच करते थे।

अपनी इस प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए महात्माजी ने संन्यास लेते समय कुछ राशि आर्य प्रतिनिधि सभा को दान करते हुए यह कहा कि आवश्यकता पड़ने पर वे इस स्थिर-निधि के सूद से कुछ राशि ले सकेंगे। श्री महाशय कृष्णजी ने इस पर आपत्ति की कि यह संन्यास की मर्यादा के विपरीत है। दान की गई राशि से यह ममत्व क्यों?

महात्माजी चाहते तो अपने निर्णय का औचित्य सिद्ध करने के लिए दस तर्क दे सकते थे। उनके पक्ष में भी कई विद्वान् लेखनी उठा सकते थे तथापि उस महान् विभूति ने तत्काल पत्रों में ऐसी घोषणा कर दी कि मैं उस राशि से कभी भी सूद न लूँगा। आपने महाशय कृष्ण के लेख को उचित ठहराते हुए, अपनी आत्मकथा में इस आदर्श को गिरा हुआ कर्म बताया।+ महात्माजी ने स्वयं लिखा कि उन्होंने जो सूद से राशि लेने वाली बात सोची थी यह उनकी आत्मा की निर्बलता ही थी। अपने गुण-दोष पर विचार करना और अपनी भूल का सुधार करना, यह आत्मोन्नति का सोपान है। नारायण स्वामीजी का जीवन इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

_तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी_ : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.	प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वैदिक शगुन लिफाफे

महर्षि दयानन्द के चित्र एवं वेदमन्त्रों सहित सुन्दर डिजाइनों में

सिक्के वाले	बिना सिक्के
मात्र 500/-रु. सैंकड़ा	मात्र 300/-रु. सैंकड़ा

प्राप्ति स्थान : -दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली
दूरभाष : 011-23360150, 09540040339

आर्य समाज जोर बाग द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न : आर्य विद्वानों के हुए विशेष उद्बोधन

आर्य समाज जोर बाग, नई दिल्ली के तत्वावधान में 21 अगस्त को भगवान श्री कृष्ण का अलौकिक गुणगान कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। दक्षिण दिल्ली की विभिन्न आर्य संस्थाओं के सैकड़ों प्रतिष्ठित प्रतिनिधियों ने उत्साह और उल्लास के साथ भाग लिया ।

आर्य समाज के प्रधान हरीश धवन, महेन्द्र जेटली, संजय गांधी और पुरोहित पं श्याम बिहारी ने यज्ञ सम्पादन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया ।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सांसद, पूर्व केन्द्रीय मन्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. सत्यपाल सिंह ने कहा योगिराज श्री कृष्ण संसार के इतिहास में सबसे बड़े राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, कूटनीतिज्ञ और धर्म रक्षक थे। उनके जन्मदिवस पर रासलीला रचाकर अद्वितीय महापुरुष पर झूठे दोष आरोपित करना अक्षम्य अपराध है। हमें प्रण करना होगा कि हम पतित अन्यायी बलवान का साथ न देकर न्यायप्रिय चरित्रवान व सत्यवादी के ही साथ खड़े होंगे- बेशक वह निर्बल व निर्धन हो, यही श्री कृष्ण का अनुकरण है - इसी पथ से राष्ट्र व विश्व का कल्याण होगा।

डॉ. विद्या प्रसाद मिश्र ने कहा कि राधा नाम की कोई महिला थी ही नहीं, यह एक मण्डली का नाम था, जिसका नेतृत्व श्री कृष्ण जी ने किया। बाहर से अध्यात्म प्रसार और अन्दर ही अन्दर कंस के समापन की योजना राधा नामक संस्था में परिपक्व हुई।

मुख्य वक्ता विश्व विख्यात पत्रकार डॉ वेदप्रताप वैदिक ने प्रेरक विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम हिन्दू लोग अपनी हर बुराई को, अपने अवगुणों को तर्कसंगत और उचित सिद्ध करने के लिए आप्त पुरुषों ओर देवी देवताओं पर मनमाने झूठे आरोप लगाते हैं। शराब, गांजा आदि नशा देवी और देवता को चढ़ाकर प्रसाद रूप में पीते-खाते तथा पिलाते व खिलाते हैं। इतना ही नहीं व्यभिचारी और भोगातुर भक्त योगेश्वर श्रीकृष्ण के झूठे आरोपों अनेक गोपियां (पत्नियाँ) उनके जीवन के साथ जोड़कर पाप के भागी बनते हुए अपनी कामेच्छा को तर्क संगत सिद्ध करने का घिनौना कुप्रयास किया जाता है महर्षि दयानन्द ने सर्वप्रथम श्री कृष्ण पर लगाए गए नापाक दोषों का ज़ोरदार खण्डन करते हुए उन्हें मानवता का उद्धारक परमयोगी बताया।

इस अवसर पर दिल्ली विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ योगानन्द शास्त्री, आर्य नेता सतीश चडा, रविन्द्र कुमार, आदित्य मिश्र, श्रीमती वीना धवन, हरिवंश डकल प्रकाशवीर शास्त्री, अशोक योगाचार्य शैलेश कुमार आदि लोग उपस्थित थे

आर्य रविदेव गुप्त जी की कथा हुई। समारोह की आध्यक्षता श्री ब्रिज गोरव खोसला ने किया। - *मन्त्री*

आर्यसमाज राजनगर पालम कालोनी का

वेद प्रचार पर्व सम्पन्न

आर्यसमाज राजनगर पालम कालोनी दिल्ली का श्रावणी वेद प्रचार पर्व 5-6-7 अगस्त को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर यजुर्वेद शतक पारायण यज्ञ के ब्रह्मा डॉ. जयेन्द्र जी एवं भजनोपदेशक/वेदकथा वाचक आचार्य कुलदीप जी रहे। समापन समारोह के अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी अतिथि रूप में उपस्थित रहे।- *धर्मपाल आर्य, प्रधान*

आर्यसमाज अशोक विहार-1 द्वारा

त्रिदिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम

आर्यसमाज अशोक विहार-1 द्वारा जन्माष्टमी पर 17-19 अगस्त तक 3 दिवसीय आध्यात्मिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। समापन के अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी का विशेष उद्बोधन हुआ। - *प्रेम सचदेवा, प्रधान*

आर्यसमाज कीर्ति नगर में

श्रावणी एवं जन्माष्टमी सम्पन्न

आर्यसमाज कीर्ति नगर दिल्ली में श्रावणी उपाकर्म एवं जन्माष्टमी समारोह 13-21 अगस्त तक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भजन श्री कंचन कुमार जी एवं प्रवचन आचार्य राजू वैज्ञानिक जी के हुए। समापन समारोह के अवसर पर सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी अतिथि रूप में उपस्थित रहे।- *विनीत बहल, मन्त्री*

आर्यसमाज बिडला लाइन्स में

श्रीकृष्ण जन्मोत्सव श्रावणी पर्व

आर्यसमाज बिडला लाइन्स में 19-21 अगस्त तक चतुर्वेद शतकम यज्ञ आचार्य कुंवरपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में हुआ। भजन आचार्य सतीश सत्यम एवं प्रवचन डॉ. छविकृष्ण शास्त्री के हुए। समापन पर श्री विनय आर्य जी के प्रवचन हुए।

- *अजय अग्रवाल, मन्त्री*

पृष्ठ 8 का शेष

श्रीमती एस्थर धनराज एवं श्री प्रबल प्रताप ...

गत वर्ष आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ के द्वारा आयोजित वैदिक ज्ञानगंगा विश्व कल्याण महायज्ञ के अवसर पर 400 परिवार जो ईसाई हो चुके थे, के 1200 सदस्यों को पुन: हिन्दू धर्म में वापसी उनके चरण पघारकर कराई थी। अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के सम्पर्क में आने पर मन्त्री श्री सुभाष दुआ जी ने उनसे सम्पर्क किया और दिल्ली पधारने का अनुरोध किया। दिनांक 25 अगस्त, 2022 को शुद्धि सभा के अधिकारी श्री सुभाष दुआ जी एवं श्री सतीश सक्सेना जी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में पधारने पर पीतवस्त्र, मोती माला एवं शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर उन्हें सभा की ओर से महर्षि दयानन्द जी का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की प्रति एवं महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट करके सम्मानित किया गया। इस सम्मान एवं स्वागत समारोह के अवसर पर दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री ओम प्रकाश आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, मन्त्री श्री कृपाल सिंह आर्य, अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के महामन्त्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, कोषाध्यक्ष श्री नीरज आर्य, शुद्धि सभा के मन्त्री श्री सुभाष दुआ एवं श्री सतीश सक्सेना तथा श्री विजय दीक्षित जी उपस्थित रहे।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 10 एवं 20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

शोक समाचार

प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्तमान उप प्रधान, पूर्व महामन्त्री एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी का दिनांक 29 अगस्त, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ पठानकोट (पंजाब) में किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 9 सितम्बर, 2022 को सम्पन्न होगी।

श्री खुशहालचन्द्र आर्य जी का पुत्रशोक

आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक, समाजसेवी श्री खुशहालचन्द्र आर्य जी के सुपुत्र श्री प्रमोद कुमार आर्य जी का 27 अगस्त, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 28 अगस्त को सायं 7 बजे केवड़ा तल्ला घाट (काली घाट) में सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 1 सितम्बर को आर्यसमाज हावड़ा में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम एपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 29 अगस्त, 2022 से रविवार 4 सितम्बर, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 31/8-1-2/9/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 31 अगस्त, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में विशेष चर्चा हेतु पधारने पर

ईसाई मत की खोखली सच्चाई उजागर करने वाली श्रीमती एस्थर धनराज एवं छत्तीसगढ़ में शुद्धि /घर वापसी अभियान के वरिष्ठ सेनानी श्री प्रबल प्रताप सिंह जूदेव का स्वागत एवं सम्मान

प्रतिष्ठा में,

एस्थर धनराज एक रुढ़िवादी दक्षिण भारतीय हिन्दू ब्राह्मण परिवार में पैदा हुई थी। 17 वर्ष की आयु में ही वह अपने माता-पिता के धर्म बदलने के कारण ईसाई धर्म में परिवर्तित हो गई। शादी के बाद, वह यूएसए चली गईं और एक प्रतिष्ठित अमेरिकी विश्वविद्यालय में औपचारिक रूप में ईसाई मत का अध्ययन किया।

किन्तु देवत्व में पीएचडी करते समय एस्थर धनराज के मन में बाइबिल को लेकर सवाल खड़े होने लगे। साथ ही एस्थर धनराज ने महसूस किया कि पश्चिमी ईसाई जगत किस प्रकार से भारतीय ईसाइयों और अन्यों के साथ भेदभाव कर रहा है। एस्थर धनराज वह लड़की थी, जिसनें अपनी छोटी सी उम्र में दो बदलावों का सामना किया पहला तो हिन्दू धर्म से ईसाई मत में और दूसरा ईसाई मत से पुन: हिन्दू धर्म में घर वापसी। आज धनराज भारत भर में कई माध्यमों से ईसाई मिशनरीज जाल से बचने के लिए लोगों को जागरूक कर रही है। ऐसी धर्म प्रेमी महिला से आर्यसमाज का सम्पर्क होने पर उन्हें दिल्ली आमन्त्रित किया गया और दिनांक 25 अगस्त, 2022 को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय में पधारने पर श्रीमती धनराज जी को पीतवस्त्र, मोती माला एवं शॉल ओढ़ाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर उन्हें सभा की ओर से महर्षि दयानन्द जी का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की अंग्रेजी प्रति एवं महर्षि दयानन्द जी का चित्र भेंट करके सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जशपुर राजपरिवार के सदस्य, बीजेपी छत्तीसगढ़ के नेता एवं हजारों परिवारों की घर वापसी कराने वाले श्री प्रबल प्रताप सिंह जूदेव जी का स्वागत एवं सम्मान किया गया। श्री प्रबल प्रताप सिंह जूदेव जी उडीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ में 10 हजार सो अधिक परिवारों की घर वापसी करा चुके हैं।

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरणा

आर्यसन्देश साप्ताहिक के शताधिक सदस्य बनाने पर

श्री जगदीश मदान जी का हार्दिक धन्यवाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सन्देश को जन-जन पहुंचाने में निरन्तर संलग्न श्री जगदीश मदान जी हरियाणा के यमुनानगर जिलान्तर्गत जगाधरी निवासी हैं और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र साप्ताहिक आर्यसन्देश के माननीय सदस्य हैं। उन्होंने आर्यसन्देश के प्रचार-प्रसार में सराहनीय भूमिका निभाते हुए गत समय में 150 से अधिक आजीवन एवं वार्षिक सदस्य बनाकर प्रत्येक आर्य पाठकों को प्रेरणा प्रदान करने का कार्य किया है।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार श्री जगदीश मदान जी का हार्दिक धन्यवाद एवं आभार व्यक्त करता है और परमपिता परमात्मा से उनके दीर्घ स्वस्थ जीवन की कामना करते हैं, जिससे वे निरन्तर आर्यसन्देश के सम्माननीय पाठकों एवं सदस्यों में वृद्धि करते रहें और सभी सदस्यों को प्रचार-प्रसार की प्रेरणा देते रहें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

आर्य प्रतिभा विकास केंद्र के विद्यार्थियों को महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद ने दिया आशीर्वाद

दिनांक 28 अगस्त, 0022 को आर्य प्रतिभा विकास केंद्र, एस एम आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग में भारत के उज्जवल भविष्य सिक्किम राज्य के विद्यार्थियों को महामहिम राज्यपाल श्री गंगा प्रसाद जी अपना स्नेहिल आशीर्वाद प्रदान करने के लिए पहुंचे। वहां पहुंचने पर अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री मनीष भाटिया जी और आर्य समाज के अधिकारियों सहित सभी विद्यार्थियों ने उनका भव्य स्वागत किया। महामहिम राज्यपाल जी ने सिक्किम राज्य के सिविल सेवा की तैयारियां कर रहे विद्यार्थियों का मनोबल बढ़ाया और उनके साथ बातचीत में उन्होंने अपने भविष्य के प्रयासों के लिए प्रेरित, मार्गदर्शन और आशीर्वाद दिया है। - ***संयोजक***

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह